Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : माँग की लोच एवं उसकी माँग [ELASTICITY OF DEMAND & ITS MEASUREMENT]

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

माँग की लोच एवं उसकी माँग [ELASTICITY OF DEMAND & ITS MEASUREMENT]

प्रारम्भिक (Introductory)

किसी वस्तु की माँग उस वस्तु की कीमत के साथ परिवर्तित होती रहती है किन्तु सभी स्थितियों में माँग के परिवर्तन की मात्रा एकसमान नहीं होती। माँग का नियम यह नहीं बताता कि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कितना परिवर्तन होगा क्योंकि माँग का नियम केवल एक गुणात्मक कथन (Qualitative Statement) है जिसके कारण यह कीमत परिवर्तन के कारण केवल माँग के परिवर्तन की दिशा को बताता है। माँग की लोच अर्थशास्त्रियों द्वारा माँग के नियम को परिमाणात्मक कथन (Quantita- tive Statement) के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि माँग की लोच किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के सापेक्ष उसकी माँग में परिवर्तित हुई मात्रा को बताती है जबकि अन्य बातें समान रहती हैं।

लोच का अभिप्राय है वस्तु में घटने या बढ़ने की प्रवृत्ति। उदाहरण के लिए, रबड़ लोचदार होती है क्योंकि दबाव पड़ने पर बढ़ जाती है और दबाव हटा लेने पर पुनः अपनी स्थिति में वापस आ जाती है। लोच दो बातों पर निर्भर करती है-वस्तु के स्वभाव पर और उस पर पड़ने वाले दबाव पर। कुछ वस्तुओं का स्वभाव ऐसा होता है कि उन पर कम दबाव डालने पर भी अधिक परिवर्तन उत्पन्न होता है, ऐसी वस्तुओं को अधिक लचीली वस्तु कहा जाता है। इसके विपरीत कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिसमें अधिक दबाव डालने पर कम परिवर्तन होता है, ऐसी वस्तुओं को बेलोच वस्तु कहा जाता है। इसी विचारधारा के साथ कीमत की माँग पर होने वाली प्रतिक्रिया के सन्दर्भ में माँग की लोच की व्याख्या की गयी है।

माँग के नियम एवं माँग की लोच में अन्तर (DIFFERENCE BETWEEN LAW OF DEMAND & ELASTICITY OF DEMAND) - किसी वस्तु की माँग उस वस्तु की कीमत के साथ परिवर्तित होती रहती है, किन्तु सभी स्थितियों में माँग के परिवर्तन की मात्रा एकसमान नहीं होती। माँग का नियम यह नहीं बताता कि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कितना परिवर्तन होगा? क्योंकि माँग का नियम केवल एक गुणात्मक कथन (Qualitative Statement) है जिसके कारण यह कीमत परिवर्तन के कारण केवल माँग के परिवर्तन की दिशा को बताता है। माँग की लोच अर्थशास्त्रियों द्वारा माँग के नियम को परिमाणात्मक कथन (Quantita- tive Statement) के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि माँग की लोच किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के सापेक्ष उसकी माँग में परिवर्तित हुई मात्रा को बताती है जबकि अन्य बातें समान रहती हैं।
इस प्रकार माँग के नियम एवं माँग की लोच में अन्तर दर्शाने वाले बिन्दु हैं-

(1) माँग का नियम एक 'गुणात्मक कथन' है जो वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर माँग में होने वाले परिवर्तन की दिशा का बोध कराता है जबकि माँग की लोच एक 'परिमाणात्मक कथन' है जो माँग के नियम में होने वाले परिवर्तन की मात्रात्मक माप प्रस्तुत करता है।

(2) माँग का नियम सामान्य दशाओं में सदैव कीमत और माँग के विपरीत सम्बन्ध का सूचक है जबकि माँग की लोच धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों हो सकती है।

(3) माँग का नियम केवल कीमत माँग के सम्बन्ध को स्पष्ट करता है जबकि माँग की लोच के द्वारा आय, सम्बन्धित वस्तु आदि में होने वाले परिवर्तनों का भी मापना सम्भव है।

माँग की लोच की परिभाषा (DEFINITION OF ELASTICITY OF DEMAND)

माँग की लोच अथवा माँग की कीमत लोच का अभिप्राय कीमत के सूक्ष्म परिवर्तन के कारण माँग की मात्रा में उत्पन्न होने वाले परिवर्तन की माप से है।

मार्शल के अनुसार, "माँग की लोच का बाजार में कम या अधिक होना इस बात पर निर्भर करता है कि वस्तु की कीमत में एक निश्चित मात्रा में परिवर्तन होने पर उसकी माँग में सापेक्ष रूप से अधिक या कम अनुपात में परिवर्तन होता है। "

सैम्युलसन के शब्दों में, माँग की लोच का विचार "कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप माँग की मात्रा में परिवर्तन के अंश, अर्थात् माँग में प्रतिक्रियात्मकता के अंश को बताता है। "

माँग की लोच (eg) = माँगी गई मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन
कीमत में आनुपातिक परिवर्तन

Elasticity of Demand = Proportionate Change in Quantity Demanded
Proportionate ChangeinPrice

माँग की कीमत लोच की श्रेणियाँ (DEGREES OF PRICE ELASTICITY OF DEMAND)

माँग की कीमत लोच पाँच प्रकार की हो सकती है-

(1) सापेक्षतः लोचदार माँग (Relatively Elastic Demand) - जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप उसकी माँग में अधिक आनुपातिक परिवर्तन हो जाता है तब ऐसी वस्तु की माँग को सापेक्षत: लोचदार माँग कहते हैं।

(2) सापेक्षतः बेलोचदार माँग (Relatively Inelastic Demand) - जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कम आनुपातिक परिवर्तन होता है तब ऐसी वस्तु की माँग को सापेक्षतः बेलोचदार माँग कहा जाता है।

(3) इकाई लोचदार माँग (Unit Elasticity of Demand)- जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी माँग में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है, तब ऐसी वस्तु की माँग को इकाई लोचदार माँग कहा जाता है।

(4) पूर्णतः बेलोचदार माँग (Perfectly Inelastic Demand) - जब किसी वस्तु की कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कोई परिवर्तन नहीं होता तो ऐसी माँग को पूर्णत: बेलोच माँग कहते हैं।

(5) पूर्णतया लोचदार माँग (Perfectly Elastic Demand)- जब किसी वस्तु की कीमत में नगण्य परिवर्तन होने पर (अथवा बिल्कुल परिवर्तन न होने पर भी) माँग में अत्यधिक परिवर्तन होता रहता है तब ऐसी वस्तु की माँग को पूर्णतया लोचदार माँग कहा जाता है। ऐसी माँग की दशा में वस्तु की अति सूक्ष्म मूल्य वृद्धि भी उसकी माँग को शून्य कर देती है तथा कीमत में अति सूक्ष्म कमी माँग में इतना अत्यधिक विस्तार करती है कि कोई अन्य विक्रेता घटी हुई कीमत पर इस माँग को सन्तुष्ट नहीं कर पाता। पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाजार में माँग वक्र की लोच अनन्त (पूर्णतया) लोचदार होती है। किन्तु व्यावहारिक एवं वास्तविक जीवन में वस्तुतः किसी वस्तु की माँग पूर्णतः लोचदार माँग नहीं होती।